Rohtas Mahila College, SASARAM

Study Material For B.A. Part III

(SANSKRIT)

काव्यदीपिका द्वितीयशिखा

Dr. Savitri Singh,
Associate Professor,
Deptt. of Sanskrit,
R.M.C. SASARAM

Date: 27.05.2020
Wednesday
Paper VII

Topic: शब्दशक्ति : लक्षणा

स्नातक भाग तीन में प्रस्तावित पाठ्यपुस्तक काव्यदीपिका (श्रीकान्तिचन्द्रभट्टाचार्यसंकलिता) में लक्षणा के स्वरूप का वर्णन और उल्लेख करते हुए आचार्य विश्वनाथ के मुख्यार्थबाधे तद्युक्तो ... ... शक्तिरर्पिता का उल्लेख किया गया है। इस क्रम में पूर्व में हमने लक्षणा के दो भेदों रूढ़ि लक्षणा और प्रयोजनवती लक्षणा को समझने की कोशिश की। जिस क्रम में 'कलिंग: साहसिक' वाक्य में किस प्रकार रूढ़ि लक्षणा द्वारा अर्थ की प्रतीति हो रही है इसे समझा।

अनन्तर प्रयोजनवती लक्षणा को समझते हैं 'गंगायाँ घोष:' — गंगा के तट पर बनी हुई झोपड़ी को देखकर किसी ने कहा है कि : यह तो झोपड़ी तो गंगा में बनी है। वास्तव में गंगा तो स्थान विशेष अथवा स्थल मार्ग विशेष में प्रवाहित होने वाली जलधारा है, जल प्रवाह है। उसमें झोपड़ी अथवा कुटिया कैसे हो सकती है।

अत: 'गंगायां घोष:' में गंगा शब्द अपने मुख्य अर्थ को छोड़कर उससे सम्बद्ध गंगातटरूपी अर्थ का लक्षणा शक्ति से बोध कराता है। इस वाक्य में वक्ता का प्रयोजन

→

यह प्रगट करता है कि जहाँ कुटिया बनी है वह स्थान ठण्डा और पवित्र है, मानो गंगा का प्रवाह ही है। इस प्रकार ठण्डेपन और पवित्रता के आधिक्य को व्यक्त करने के लिए ही उसने गंगा में झोपड़ी है। इस वाक्य का प्रयोग किया। किसी प्रयोजन से जिस लक्षणा का प्रयोग किया जाय उसे प्रयोजनवती लक्षणा कहते हैं

इस प्रकार लक्षणा रूढ़ि और प्रयोजन के भेद से दो प्रकार की हुई। इन दोनों लक्षणाओं के भी दो दो भेद कहे जाते हैं। उपादान लक्षणा और लक्षणलक्षणा। इस प्रकार रूढ़िमूला, प्रयोजनवती, उपादान लक्षणा और लक्षण-लक्षणा भेद से लक्षणा चार प्रकार की होती है

उपादान लक्षणा :

स्वसिद्धये पराक्षेपः स्यादुपादानलक्षणा।

अपने अर्थ को बोध कराने के लिए जहाँ पर दूसरे पद का आक्षेप किया जाता है, उसे उपादानलक्षणा कहते हैं इस प्रकार वाच्यार्थ के ~~[illegible]~~ अन्वयबोध के लिए जहाँ लक्ष्यार्थ बोध में वाच्यार्थ से सम्बद्ध लक्ष्यार्थ का बोध होता है, वह उपादानलक्षणा कही जाती है। जैसे 'यष्टयः प्रविशन्ति' (लाठियाँ प्रवेश कर रही हैं) यह अचेतन होने के कारण यष्टि का स्वतः प्रवेश करना सम्भव नहीं है अतः यष्टि पद से यष्टिधारी पुरुष का आक्षेप किया जाता है, लाठी वालों के प्रवेश के साथ ही लाठियों का प्रवेश उचित है अतः इसे उपादानलक्षणा कहते है इस लक्षणा में पद अपने अर्थ को न छोड़कर अन्वयबोध के लिए पदान्तर का आक्षेप करके उनके साथ स्वयं अन्वित हो, अर्थबोध कराते है, इसलिए इसे अजहत् स्वार्था भी कहते हैं।

Scanned by CamScanner